सुनो रूहें अर्स की

सुनो रूहें अर्स की, जो अपनी बीतक।
जो हमसे लटी भई, ऐसी करे न कोई मुतलक।।

मीठा गुझ मासूक का,काहूं आसिक कहे न कोए।
पड़ोसी पण ना सुनें, यों आसिक छिपी रोए।।

हक बोलावें सरत पर, आपन रेहेने चाहें इत।
लेवे गुझ मासूक का, कहें दुनियां को हकीकत।।

प्यारा जिनको मासूक, तिनके प्यारे लगें वचन।
सो कबूं न केहेवे और को, मासूक प्यारा जिन।।

महामत कहे ए मोमिनो, कोई नाहीं हक बिगर।
लाख बेर मैं देखिया, फेर-फेर सहूर कर ।।